Sudarshan Research Journal, 2025;3(2): Page No: 24-32

SUDARSHAN RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2583-8792 (Online)

Journal home page: https://sudarshanresearchjournal.com/

Review Article

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास के मॉडल को साकार करती सरकारी योजनाएं: एक अध्ययन

अंचल, प्रो. अरुण कुमार*

ARTICLE INFO

Article history:
Received: 28/01/2025
Revised: 22/02/2025
Accepted: 15/03/2025
Published: 17/03/2025

मुख्य शब्द:
अन्त्योदय, ग्राम स्वराज, समरसता, स्वदेशी, सर्वांगीण, बहुआयामी|

शोध सारांश

भारत की जनसँख्या का सबसे ज्यादा भाग गाँव में रहता है और अपनी आजीविका के लिए गाँव पर ही निर्भर करता है | देश की 68 % जनसँख्या गाँव में रहती है | प्राचीन समय से ही भारत की संस्कृति और भारत की अर्थव्यवस्था गाँव के आस-पास ही घुमती है | गाँव ही हमारी अर्थव्यवस्था का मुख्य केंद्र रहे हैं | परन्तु वर्तमान समय में काल का चक्र ऐसा घूमा कि ग्रामीण अर्थव्यस्था का स्थानांतरण शहरों की ओर होना शुरू हो गया | इससे कुछ ऐसे गाँव है जो पूर्ण रूप से खाली हो चुके हैं | गाँव का जनसँख्या विहीन होना बहुत बड़ी समस्या का कारण है | इस पलायन से गाँव की संस्कृति और संस्कार पीछे छूटते जा रहे हैं | दीनदयाल उपाध्याय गाँव को समृद्ध करने के लिए कहते थे कि ग्राम्य विकास के लिए सरकार को गाँव के गरीब, निर्धन और दीनहीन लोगों को ध्यान में रखते हुए योजनायें बनानी चाहिए | दीनदयाल जी ने इसके लिए एकात्म मानववाद और अन्त्योदय की अवधारणा दी | इसमें दीनदयाल सुदूर देहात के व्यक्ति के उदय की बात करते हैं|

प्रस्तावना

भारत को गाँव का देश कहा जाता है | भारत की जनसँख्या का ज्यादातर और कामगार भाग गाँव में रहता है और इनकी आय का एवं मूलभूत आवश्यकताओं का मुख्य केंद्र गाँव ही है | अत:ग्रामीण क्षेत्र के विकास का सीधा सम्बन्ध भारत के विकास से है | जनगणना 2011 के अनुसार भारत की 68.84 % जनसँख्या गाँव में ही रहती है | अत: गाँव को भारत का प्राण कहा जाये तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं | वास्तव में भारतीय गाँव भारतीय संस्कृति, भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल हैं | इसलिए पंडित दीनदयाल कहते थे " आर्थिक योजनओं तथा आर्थिक प्रगति का माप समाज की ऊपर की सीढ़ी पर पहुंचे व्यक्ति से नहीं, बल्कि सबसे नीचे की सीढ़ी पर विद्यमान व्यक्ति से होगा | ग्रामों में जहाँ समय अचल खड़ा है, जहाँ माता और पिता अपने बच्चों के भविष्य को बनाने में असमर्थ हैं, वहां जब तक हम आशा और पुरुषार्थ का सन्देश नहीं पहुंचा पाएंगे तब तक राष्ट्र के चैतन्य को जागृत नहीं कर सकेंगे |"

मार्कंडेय पुराण के अनुसार गाँव की परिभाषा देते हुए कहा गया है :-
"तथा शुद्रजनप्रायाहा सुसंरुद्ध कृषीवलाहा | क्षेत्रोपयोग भुमध्ये वसति ग्रामताहा ||
अर्थात जहाँ हस्तशिल्पी मजदूर और किसान लोग रहते हैं, जहाँ कृषि उद्योग प्रधान होते हैं, जहाँ सब संपत्ति कृषि उद्योग के कारण होते हैं | चारों खेती भूमि है उसी स्थान को ग्राम कहते हैं |"

Author Address: शोधार्थी, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, केन्द्रीय वि.विद्यालय, धर्मशाला हिमाचल प्रदेश

***Corresponding Author:** प्रो. अरुण कुमार

Address: शोध पर्यवेक्षक एवं अध्यक्ष, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, केन्द्रीय वि.विद्यालय, धर्मशाला हिमाचल प्रदेश

Relevant conflicts of interest/financial disclosures: The authors declare that the research was conducted in the absence of any commercial or financial relationships that could be construed as a potential conflict of interest.

© 2025, Anchal, this is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work non-commercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

पूर्व में ग्राम विकास से तात्पर्य केवल कृषि से लिया जाता था परन्तु वर्तमान में यह धारणा बदली है

महाभारत के शांति पर्व में गाँव के विकास को लेकर कुछ अधिकारी नियुक्त किये जाते थे : "ग्रामस्याधिपति: कार्यो दशग्राम्यास्तथा पर: | द्विगुणाया: शतस्यैव सहस्त्रस्य च कारयेत् || अर्थात् एक गाँव का, दस गाँव का, बीस गाँव का, सौ गाँव का, तथा हजार गाँव का अलग – अलग एक एक अधिपति बनाना चाहिए |"

उपरोक्त उदाहरणों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि भारत में ग्राम विकास की अवधारणा चिर पुरातन है I

पंडित दीनदयाल ने भारतीय समाज और भारतीय मूल्यों के आधार पर एक ऐसा चिंतन दिया जो एकांगी न होकर एकात्म था | यह चिंतन एकात्म मानववाद कहलाया | पंडित दीनदयाल अपने चिंतन में गाँव के सर्वंगीण विकास की बात करते हुए कहते हैं कि गाँव का विकास आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर होना चाहिए |

साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना बहुत आवश्यक होता है I इस प्रक्रिया के माध्यम से जहाँ हमें शोध के मूल विषय से सम्बंधित विषय सामग्री की विस्तृत जानकारी मिलती है I वहीं दूसरी तरफ शोध के लिए अंतर्दृष्टि भी प्राप्त होती है, जिससे शोध का मार्ग सहज, सरल और सुलभ हो जाता है I

इस दृष्टि से वर्तमान शोध कार्य को पूरा करने के लिए तथा सैद्धांतिक समझ के लिए शोधार्थी ने भी अनेक पुस्तकों, शोध पत्रों, शोध रिपोर्टों, शोध विषय से सम्बंधित आलेख व अन्य अध्ययन सामग्री का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया है I इनकी चर्चा इस प्रकार है :

सिंह,अमरजीत. द्वारा निर्मित इस पुस्तक में पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा भिन्न भिन्न समय में भिन्न भिन्न विषयों पर दिए गए विचारों को संकलित किया गया है I इस पुस्तक में दीनदयाल के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और ग्रामीण चिंतन के सम्बन्धी विषयों को व्यक्त किया गया है और साथ ही राष्ट्रीय विचारों को प्रस्तुत किया है I

अग्रवाल,डॉ रविन्द्र. ने अपनी पुस्तक के माध्यम से दीनदयाल के विचारों को प्रस्तुत किया है I साथ ही बताया है कि पंडित दीनदयाल के कृषि, उद्योग, पूंजीवाद, साम्यवाद और अन्य विचार भारतीय सन्दर्भ में कितने सार्थक हैं I इस पुस्तक में बताया गया है कि अर्थव्यवस्था प्रतियोगिता के आधार पर नहीं बल्कि सहयोग के आधार पर चलनी चाहिए |

रिपोर्ट, भारत सरकार. भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा दिए गए 'राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के कार्यान्वयन फ्रेमवर्क' के नाम से दी रिपोर्ट में ग्राम स्वराज के लिए किये गए कार्यों का वर्णन किया गया है I इस में ग्राम के लिए तह योजनाओं उपयुक्तता, ग्राम स्वराज के उद्देश्य एवं सरकार द्वारा ग्रामीण स्वराज और ग्रामीण विकास के लिए निर्धारित किये गए सतत विकास के लक्ष्यों को बताया गया है I ग्राम पंचायतों की पृष्ठभूमि के बारे में स्पष्ट किया है I

वेदव्यास,महर्षि. महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रणित महाग्रंथ महाभारत के शांति पर्व में महभारत के घटित होने के बाद का वृतांत है I इस महाग्रंथ में शासन, राजधर्म, दंड, पाप –पुण्य, धर्म –अधर्म, नगर और गाँव के विषय में बतलाया गया है I इस ग्रन्थ के अध्याय 87 में राष्ट्र की रक्षा तथा वृद्धि के उपाय बताएं है I

अग्रवाल,डॉ अमित. द्वारा लिखित पुस्तक में भारत के ग्रामीण समाज के जीवन की चर्चा की गयी है I इस पुस्तक में ग्रामीण परिवेश के बारे में बताया है I साथ ही गाँव के जीवन, संस्कृति, रीति रिवाजों और जाति के विषयों से सम्बन्धी बात की है I गाँव के आर्थिक विकास की भी बात कही है कि किस प्रकार भारतीय गाँव के लोग अपनी आजीविका अर्जित करते है और कैसे उनके जीवन स्तर को उन्नत किया जा सकता है I

उपाध्याय,दीनदयाल. द्वारा स्वयं रचित पुस्तक एकात्म मानववाद में दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्रवाद की सही कल्पना, एकात्म मानववाद, व्यष्टि– समष्टि में समरसता एवं राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ – रचना के बारे में स्पष्ट किया है I इस पुस्तक में दीनदयाल उपाध्याय ने समाज के सही निर्माण कैसे हो I सतत विकास की अवधारणा को स्पष्ट किया है I और बताया है कि कैसे सबको साथ ले कर विकास किया जा सकता हैI

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध उद्देश्यों की चर्चा निम्नलिखित रूप से कर सकते हैं :

1. पंडित दीनदयाल के विचार दर्शन एवं सिद्धांतों का अध्ययन करना,
2. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण चिंतन का अध्ययन एवं विश्लेषण करना,

3. वर्तमान ग्रामीण व्यवस्था में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक संकल्पनाओं के समावेश का परीक्षण करना,
4. सरकार द्वारा पंडित दीनदयाल के विचारों से प्रेरित हो ग्रामीण विकास योजनाओं का अध्ययन करना, और
5. वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास मॉडल के क्रियान्वयन की सम्भावना की खोज करनाI

शोध प्रविधि

वर्तमान शोध प्रमाणिकता से किया गया है अतः हमने इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए पंडित दीनदयाल उपध्याय के द्वारा लिखित पुस्तकों, उनके द्वारा समय समय पर व्यक्त आर्थिक एवं ग्राम्य विकास के विचारों सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन किया है I इसके साथ साथ दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास सम्बन्धी विचारों पर आधारित शोध पत्रों, आलेखों व भाषणों का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष तक पहुँचाने का प्रयास किया है I

शोध अध्ययन

दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास मॉडल के मुख्य सिद्धांत

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का ग्रामीण विकास मॉडल समाज के दीन हीन, निर्धन व्यक्ति के निर्माण पर केन्द्रित है | इसके लिए दीनदयाल उपाध्याय ने अन्त्योदय, एकात्म अर्थनीति, स्वदेशी, विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता का विचार दिया | विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के बारे में पंडित दीनदयाल के शब्द हैं : " विकेंद्रीकरण की अंतिम इकाई व्यक्ति और परिवार होना चाहिए |"

पंडित दीनदयाल छोटे छोटे उद्योगों पर आधारित अर्थव्यवस्था की बात करते थे | वह चाहते थे कि गाँव के लोग अपने ही क्षेत्र में लघु उद्योगों के माध्यम से अपना और अपने परिवार का भरण पोषण कर सकें तथा आत्मनिर्भर बन सकें |

1. स्वदेशी अर्थव्यवस्था : पंडित दीनदयाल मानव को केंद्र में रख कर आर्थिक विकास की बात करते थे | उनका स्वदेशी अर्थव्यवस्था का चिंतन विकेंद्रीकरण,लघु उद्योग और आत्मनिर्भरता पर आधारित अर्थशास्त्र है | स्वदेशी का मतलब है कि अपने देश में निर्मित साधनों का प्रयोग | पंडित दीनदयाल कहते है कि " स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी होनी चाहिए |" स्वदेशी का भाव हमारे मन, वचन, बुद्धि, और कर्म में होना चाहिए | हमें इस विचार को लेकर तटस्थ रहना चाहिए | स्व के भाव को परिस्थिति और समय के कारण भूलना नहीं चाहिए | पंडित दीनदयाल इस पर कहते कि " जब तक अंग्रेज थे तब तक हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजीयत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु जब अंग्रेज चले गये है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति की द्योतक एवं माध्यम बन कर अनुकरण की वास्तु बन गयी है |"

क्योंकि आज़ादी से पहले भारत को परतंत्रता से मुक्त करवाने का मुख्य हथियार स्वदेशी ही था | स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सभी के मन में यह भाव था कि भारत अब अपनी नीतियों के कारण विकास के पथ पर अग्रसर होगा | परन्तु भारत की नवनिर्मित सरकार की नीतियों के कारण आशाएं निराशा में बदल गयीं | दीनदयाल उपाध्याय अपनी पुस्तक 'भारतीय अर्थ- नीति' में कहते हैं " जो राष्ट्र दूसरों पर निर्भर रहने की आदत डाल लेता है, उसका स्वाभिमान नष्ट हो जाता है | स्वाभिमान शून्य राष्ट्र कभी अपनी स्वतंत्रता की कीमत नहीं आंक सकता है|" स्वदेशी का विचार देते हुए दीनदयाल कहते हैं- "स्वदेशी का युगानुकुल विचार और विदेशी का स्वदेशानुकुल विचार" होना चाहिए |

देश की उन्नति का आर्थिक मूल स्वदेशी होना चाहिए | मजदूर संघ ने 1982 में घोषणा करते हुए कहा कि भारत आर्थिक गुलाम बनने की दिशा में अग्रसर हो रहा है | उस समय मजदूर संघ ने नारा दिया था : "स्वदेशी अपनाओ- भारत को आर्थिक गुलामी से बचाओ|"

2. अंत्योदय : देश और राष्ट्र को परम वैभव तक ले जाने की कल्पना वही मानव कर सकता है जिसके हृदय में दूसरों की पीड़ा समझने का सामर्थ्य हो | जो दूसरों के दुःख से दुखी हो और उनके दुःख को दूर करने के लिए प्रयास करता हो उसे युगद्रष्टा कहने में कोई बुराई नहीं होगी | ऐसे दूरद्रष्टा विरले ही पैदा होते हैं जिनमें पंडित दीनदयाल एक थे | स्वामी विवेकानंद कहते है कि "गाँव गाँव तथा घर घर में जाकर लोकहित एवं ऐसे कार्यों में आत्मनियोग करो, जिससे कि जगत का कल्याण हो सके |"

स्वामी विवेकानंद ने 'दरिद्र नारायण' शब्द दिया था और कहा "वे जो लोग किसान, मजदूर, मोची, मेहतर, जुलाहे हैं जो भारत के नगण्य मनुष्य हैं, विजाति – विजित, स्वजाति – निन्दित छोटी छोटी जातियां हैं, वही लगातार चुपचाप काम करती जा रही हैं | देश का धन धान्य वही उत्पन्न कर रहे हैं | वास्तव में वही राष्ट्र की रीढ़ है |" स्वामी विवेकानंद कि तरह ही पंडित दीनदयाल का आर्थिक चिंतन भारत की समग्रता को दर्शाता है | जब तक देश के छोटे से छोटे गाँव में साधन हीन ग्रामीणों को सरकार की योजनायें लाभ नहीं पहुंचाएंगी तब प्रत्येक गाँव के अंतिम

साधनहीन व्यक्ति का आर्थिक विकास असंभव है | इसके लिए दीनदयाल कहते हैं कि अंतिम व्यक्ति और गाँव के उदय के लिए ग्राम आधारित लघु उद्योग लगाने चाहिए | जिसे गाँव में हाथ से काम करने वालों का शहर की और पलायन थम सके | इसके लिए दीनदयाल अपने पुस्तक भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा ने कहते हैं "हमे गाँव में ही उद्योग धंधे खोलकर लोगों को पूरे समय के लिए काम में लगाना होगा |" पंडित दीनदयाल का यह मानना था कि "विकास की शुरुआत उस अंतिम व्यक्ति से करनी चाहिए जो पिछड़ा और समाज में सब रूप से निचले स्तर पर है |"

3. स्थानीय संसाधनों का प्रयोग: जो साधन मनुष्य की जरूरतों को पूरा करते है उन्हें संसाधन की संज्ञा दी जाती है | संसाधनों को हम तीन भागो में बाँट सकते हैं |

a. प्राकृतिक संसाधन: इन संसाधनों में जल, भूमि, वायु, मिट्टी, खेती, नदियाँ इत्यादि आते हैं
b. मानव निर्मित संसाधन : इनमें मानव द्वारा तैयार किये हुए साधन आते हैं जैसे सड़क, यातायात, बांध, इमारतें
c. 3.मानव संसाधन : इन संसाधनों में मानव स्वयं संसाधन के रूप में प्रयोग होता है | किसी कार्य को करने वाला जैसे शिक्षक, किसान, लोहार, बढ़ई, मोची, इत्यादि |

जब हम ग्रामीण विकास की बात करते हैं तो हम देश के संसाधनों द्वारा किये जाने वाले कार्य की बात करते हैं | पंडित दीनदयाल कहते हैं अगर देश का विकास सच में करना है तो हमे अपने संसाधनों पर निर्भरता को बढ़ाना पड़ेगा | पंडित दीनदयाल विदेशी वादों का विरोध करते थे | पूंजीवाद और समाजवाद भारतीय अर्थव्यस्था के लिए घातक हैं | दीनदयाल का मानना था कि गाँव के लोगों द्वारा गाँव में रहकर ही गाँव में उपलब्ध कार्यों से रोजगार अर्जित किया जा सकता है उसके लिए उन्होंने कृषि, सिंचाई, लघु उद्योग और कच्चे माल की उपलब्धता, खाद एवं उर्वरक इत्यादि बताये | "पश्चिम जगत के लोगों ने ज्यादा उत्पादन के चक्कर में रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि की उपजाऊ शक्ति को नष्ट कर दिया है |" इसके लिए इन्होने कहा कि भारत की भूमि की उत्पादकता शक्ति के लिए गोबर और गाय का मूत्र सबसे अच्छा साधन है | गाँव में कृषि की सिंचाई के लिए विदेशी तकनीक पर आधारित बड़े बांधों का नहीं बल्कि छोटे बांधों का प्रयोग करना | पंडित दीनदयाल अपनी पुस्तक अर्थनीति विकास की एक दिशा में देश स्थित इन तीन प्रकार के संसाधनों का सदुयोग करने का आह्वान करते हैं |

4.समरसता : भारत देश विविधताओं वाला देश है इसमें अनेक प्रकार की भाषाएँ – बोलियाँ, वेशभूषा और जातियों का समावेश है | पंडित दीनदयाल उपाध्याय "राष्ट्र के उत्थान की बात करते हुए राष्ट्र की आत्मा की बात करते हैं और कहते है कि जिस प्रकार मानव शरीर अनेक अंगों से बना हुआ है और उसके अंदर एक मन निवास करता है | ठीक उसी प्रकार देश के भीतर रहने वाला यह समाज राष्ट्र की आत्मा है |" पश्चिम के लोगों में वर्ग संघर्ष की मानसिकता प्रबल है | किन्तु हमारे यहाँ जाति का भेद भाव दिखता है | दीनदयाल एकात्मता और समरसता की बात करते हुए कहते हैं कि "हमारे यहाँ जाति की नहीं बल्कि वर्णों का उल्लेख हैं, हम मानते हैं कि यह चार वर्ण विराट पुरुष के अंग हैं | इस परुष के सिर से ब्राह्मण, बाजुओं से क्षत्रिय,पेट से वैश्य और जांघो से शूद्र की उत्पत्ति मानी है |" जैसे इन चार अंगो का आपस में कोई संघर्ष नहीं होता बल्कि पैर में चोट लगने से दिमाग में पीड़ा होती है | यदि शरीर का एक अंग छिन्न हो जाता है तो पूरा शरीर निर्बल हो जाता है, ठीक उसी प्रकार समाज का एक भी भाग छूट जायेगा तो राष्ट्र की शक्ति का क्षय हो जायेगा | हमारा प्रान्त, भाषा और वेशभूषा अलग होने पर भी हमारी संस्कृति एक है | यही हमारी समरसता और एकात्मता का प्रतीक है | राष्ट्र की समृद्धि के लिए गाँव को समरस बनाना आवश्यक है क्योंकि गाँव हमारी संस्कृति की धुरी हैं |

5.सम्पूर्ण एवं सर्वांगीण विकास : व्यक्ति के चंहुमुखी विकास की बात कही गयी है | पंडित दीनदयाल जब अंतिम व्यक्ति के उदय की बात करते हैं | वह कहते हैं कि वह अंतिम व्यक्ति सुदूर बीहड़ और देहात का हो जो अब तक विकास की इस दौड़ में शामिल ही नहीं हुआ है | जब हम सर्वंगीण और सम्पूर्ण विकास की बात करते है तो इसमें केवल आर्थिक एवं राजनीतिक विकास ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास भी जरुरी है | पंडित दीनदयाल कहते हैं " व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है | व्यक्ति के सर्वंगीण विकास में इन चारों का धयान रखना होगा | चारों की भूख मिटाए बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न ही अपने व्यक्तिगत का विकास कर सकता है | भौतिक और अध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति आवश्यक है | आजीविका के साधन, शांति, ज्ञान एवं तादात्म्य भाव से ये भूख मिटती है | सर्वंगीण विकास की कामना ही व्यक्ति को समाजहित में कार्य की प्रेरणा देती है |"

6.ग्राम स्वराज : हमारा देश भारत गाँव का देश है | भारत में वर्तमान समय में लगभग 6 लाख से ज्यादा गाँव हैं | भारत में ज्यादातर जनसँख्या इन्हीं गाँव से आती है ,अत: हम यह कह सकते हैं कि ग्रामीण जनसँख्या का वोट प्रतिशत भी श्री क्षेत्र की तुलना में अधिक है | क्योंकि शहरी क्षेत्र की वर्तमान रचना के पीछे गाँव का ही आधार है | ग्राम स्वराज की जब हम बात करते हैं तो हम ग्रामीणों के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास की बात करते हैं | इसमें शक्तियों को केन्द्रित न करके विकेंद्रीकरण की बात करते हैं | ताकि गाँव में रहने वालों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सके | महत्मा गाँधी ने ग्राम स्वराज की कल्पना की थी | पंडित दीनदयाल उपाध्याय गाँव स्वराज के लिए विकेंद्रीकरण का मन्त्र दिया ताकि गाँव की समस्याओं का निवारण गाँव के स्तर पर ही हो जाये |इसके लिए पंडित दीनदयाल ने कहा "गाँव में हमारी सभ्यता – संस्कृति का विकास हुआ | ग्राम पंचायतें थीं, वे ही हमारे जीवन की आधारशिला थीं |" पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्राम पंचायतों के बारे में कहते हैं कि भारतीय परंपरा तथा आदर्शों का ध्यान न रखते हुए ही हमारी सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की इकाई ग्राम पंचायतों को भुला दिया गया है | जिसके कारण जनतंत्र में गुणात्मक प्रतिनिधितव का अभाव है | ग्राम पंचायतों को आधार मानने से न तो निरंकुशता का भय रहेगा, न प्रांतीयता का और न ही व्यक्तिगत अहंकार की बुद्धि का |"

दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास मॉडल की विशेषताएं

1.समावेशी विकास : पंडित दीनदयाल के 'एकात्म मानववाद' और 'भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा' में व्यक्ति को केंद्र में रख कर उसके समावेशी विकास का मॉडल देते है | पंडित दीनदयाल व्यक्ति के ऐसे विकास की बात करते हैं जिससे व्यक्ति वह सारी सुविधाएँ अपने घर के पास ही तैयार कर सके | ताकि गाँव का मनुष्य आत्मनिर्भर बन सके और अपनी जरूरतों को पूरा कर सके | व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपडा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य पूरी हो सकें |

2. सतत विकास : सतत विकास को लेकर पूरी दुनिया अब भारत की और देखती है | 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक हुई जिसमें मनुष्य के गुणात्मक जीवन के लिए 17 सतत विकास लक्ष्यों को तह किया गया | भारतीय समाज का चिंतन सनातन काल से ही सतत विकास की प्रक्रिया को मानने वाला है | सतत विकास का सम्बन्ध निरंतर होनी वाली विकास की क्रिया से है न कि सबका एक ही समय में उपभोग करने से है | पश्चिम सभ्यता का मानना है कि प्रकृति में जो कुछ है उसका दोहन अभी कर लेना चाहिए आने वाली पीढ़ियों की वे चिंता नहीं करते हैं | हमारा सनातन चिंतन यह कहता है कि हमें जितनी जरुरत है उतना ही लें बाकि आने वाली पीढ़ियों के लिए रहने दें | पंडित दीनदयाल कहते हैं कि " उत्पादन का सम्बन्ध प्राकृतिक साधनों से भी है | यदि अंधाधुंध उत्पादन बढ़ाते गये तो यह प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे ? यदि बड़ी तेजी के साथ आवश्यक रूप से हम उसका खर्च करते गए तो एक दिन हमे पछताना होगा |" उपाध्याय.(2008).एकात्म मानववाद.

3. सशक्तिकरण : गाँव के सशक्तिकरण की जब बात करतें हैं तो हम इसमें ग्राम स्वराज को देखते हैं | जब देश अंग्रेजों के अधीन था तो गाँव का सारा तंत्र अंग्रेज ही चलाते थे | आज़ादी के बात धीरे धीरे गाँव को सशक्त बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई | गाँव को सशक्त बनाने के लिए दीनदयाल ग्राम पंचायतों की बात करते थे | वे कहते थे कि राजनीति का विकेंद्रीकरण कर ग्राम पंचायतों को शक्ति का केंद्र बनाना चाहिए| दीनदयाल उपाध्याय का अन्त्योदय, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण का चिंतन सशक्त समाज की उत्पति करता है |

दीनदयल उपाध्याय के ग्रामीण विकास मॉडल का महत्व :

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण चिंतन का वर्तमान में महत्व अधिक हो जाता है क्योंकि आज की परिस्थिति ऐसी हो गयी है कि गाँव के लोग अपनी आजीविका के लिए शहरों की ओर पलायन कर रही है गाँव के गाँव खाली होने लगे हैं | गाँव का खाली होना हमारे देश की संस्कृति से दूर जाना है | जो व्यक्ति गाँव का पढ़ लिख कर नौकरी करने लग जाता है तो वह अपने गाँव को छोड़ शहरों में बसने लगता है| इसमें सरकार की कमी यह है कि वहां सुविधाएँ पहुँचाने देरी हुई है| पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहते है कि हमे छोटे छोटे ऐसे ग्रामोद्योग लगाने पड़ेंगे ताकि गाँव के लोग सशक्त, आत्मनिर्भर, सुसंस्कारी, शिक्षित और गाँव का भला करने वाले बनें | जिससे ग्रामीण अपने गाँव में ही गरीबी के आभाव में सुख पूर्वक रह सकें |

1.गरीबी उन्मूलन : पंडित दीनदयाल जब पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति के उदय की बात करते हैं तो इनके इस कथन में व्यक्ति के रोजगार की बात कहते हैं | गाँव का व्यक्ति जो इस भागती हुई अर्थव्यवस्था में कही थम सा गया है उसको रोजगार कैसे उपलब्ध हो और इनको गरीबी के जंजाल से बाहर निकला जाये | पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण रोजगार के लिए कहते थे कि " परत्येक को वोट जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निकष है, वैसे ही प्रत्येक को काम यह आर्थिक प्रजातंत्र का मापदंड है | प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा काम मिले, जिससे उसका ठीक से जीविकोपार्जन हो सके, उसे अपना काम चुनने की स्वतंत्रता हो तथा

उसे अपने काम के बदले न्यायोचित पारिश्रमिक मिल सके।" संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्ट के अनुसार "NFHS-5 के दिए हुए 2019-21 के आंकड़ों के अनुसार भारत की ग्रामीण बहुआयामी गरीबी की प्रतिशतता 19.28 % है। यह गरीबी NFHS-4 2015-16 में ग्रामीण बहुआयामी गरीबी 32.59 % थी।"

2. सर्वे भवन्तु सुखिनः : पंडित दीनदयाल उपाध्याय जब अर्थनीति का चिंतन करते हुए विकेंद्रीकरण के बारे में कहते हैं कि विकेंद्रीकरण का अंतिम पड़ाव मानव और परिवार होना चाहिए। इसी के साथ दीनदयाल प्रकृति और पर्यावरण की बात करते हैं। प्राकृतिक साधनों की जितनी जरुरत है उतना ही प्रयोग करना चाहिए और बाकि को आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा लेनी चाहिए। हमारा सनातन चिंतन सभी के सुख की कामना करता हुआ कहता कि सभी सुखी हों सभी निरोगी हों। सभी भद्र बनें और किसी को भी दुःख की प्राप्ति न हो। अतः पंडित दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन भी सब के सुख की कामना करता है।

दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास मॉडल को साकार करती सरकारी योजनाएं

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत को जो चिंतन दिया उसका आज के युग में बड़ा महत्व है। पंडित दीनदयाल ने अंतिम व्यक्ति के उत्थान की बात कही ताकि भारत के शहरी चकाचौंध से दूर स्थित गाँव में रहने वाले दीन दुखी का उदय कर उसे सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया जा सके। पंडित दीनदयाल कहा करते थे कि सरकार को विकास की योजनायें ऊपरी सीढ़ी पर विद्यमान लोगों को देख कर नहीं बल्कि निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति को देखते हुए बनाई जानी चाहिए। सरकार ने दीनदयाल के मॉडल को साकार रूप दिया और जनमानस की भलाई के लिए योजनओं के प्रारूप में उतारा।

1. दीनदयाल अन्त्योदय योजना -राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन : भारत सरकार द्वारा चलाई गयी राष्ट्रीय आजीविका मिशन योजना का उद्देश्य रोजगार सृजन के लिए मजबूत तंत्र तैयार करना है। भारत मे बड़ी ग्रामीण आबादी का भाग अभी भी गरीबी रेखा से नीचे रहता है। गरीब जनसँख्या की कमी के लिए भारत सरकार ने 2010 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की शुरुआत की। मार्च 2016 में इस योजना का नाम दीनदयाल अन्त्योदय योजना -राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन कर दिया गया। इस योजना के द्वारा ग्रामीण निर्धनता को दूर करना है। DAY – NRLM मुख्य रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने का काम करता है। इस योजना का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। महिलाओं एवं युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही उपक्रमशील बनाकर रोजगार प्राप्त करने योग्य बनाना है। यह योजना शुद्ध रूप से केंद्र सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजना है। केंद्र और राज्य इन समूहों की आर्थिक रूप से सहायता देते हैं। इस योजना के द्वारा भारत के लगभग सभी गाँव में वहां के व्यक्तियों द्वारा बनाये गए स्वयं सहायता समूहों को एक दशक के भीतर सामूहिक रूप से आय अर्जित करने के लिए अपने पैरों पर खड़ा करने का उद्देश्य तय किया है।

2. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना : दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना की शुरुआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर 25 सितम्बर 2014 को भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा की गयी। यह योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के ही अंतर्गत आती है। इस योजना का उद्देश्य गाँव में गरीब परिवारों को रोजगार मुहैया करना और गाँव के युवाओं को किसी कार्य में कुशल प्रशिक्षण देकर उनको आत्मनिर्भर बनाना है। इस योजना के अंतर्गत ऐसे कई प्रकार के कार्यक्रम चलाये गए जिससे युवाओं को कुशलता का प्रशिक्षण दिया जाये। जो इस प्रकार हैं- मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, डिजिटल इंडिया इत्यादि।

3. प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण : हमारे देश जनसँख्या की दृष्टि में दुनिया में दुसरे नंबर पर है इसे पहले नंबर पर आने में ज्यादा देर नहीं लगेगी। भारत में गरीबी के कारण बहुत सी ऐसी जनसँख्या है जो बिना घर के खुले असमान के नीचे भगवान के भरोसे अपना गुजर बसर कर रही है। इसके लिए भारत सरकार ने बिना मकान के लोगों को मकान उपलब्ध करवाने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना का शुभारंभ किया। यह योजना पहले इंदिरा गाँधी आवास योजना के नाम से जनवरी माह में 1996 को शुरू की गयी थी। अप्रैल 2016 से इस का नाम बदल कर प्रधानमंत्री आवास योजना कर दिया। इस योजना के अंतर्गत गाँव के जो लोग गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं। उनको इसके लिए 1.5 लाख की वितीय राशि प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत अगर जिस मकान में शौचालय नहीं होगा तो उसे पूर्ण आवास नहीं माना जायेगा।

4. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना : किसी भी देश का विकास तब तक संभव नहीं होता जब तक देश के गाँव और कस्बों को रास्तो और सडकों से नहीं जोड़ा जाये। भारत में ऐसे कई गाँव थे जहाँ सड़क की पहुँच नहीं थी। और यहाँ पहुंचना मील का पत्थर ही लगता था। अभी भी कुछ गाँव है जहाँ सडकों के आभाव में वहां के लोगों तक सुविधा का आभाव रहता है अगर कोई बीमार हो जाता है तो उसको अस्पताल

तक पहुँचाना बड़ा मुश्किल होता है | इन संपर्क विहीन गाँव तक संपर्क स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का आरंभ 25 दिसम्बर 2000 को किया गया | इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए दो प्रकार से बांटा पहला जो मैदानी क्षेत्र उनके लिए 500 की आबादी वाले गाँव और पहाड़ी क्षेत्र जैसे हिमाचल, उतराखंड, जम्मू कश्मीर, और पूर्वोतर राज्यों में 250 की आबादी वाले क्षेत्र लिए | बजट 2024 – 25 में जिन अंचलों में 25000 ग्राम्य बस्तियों को सारा साल चलने वाली सड़क सुविधा उपलब्ध करवाना | इसके लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना – IV शुरू करना है | 2021 तक इस योजना के अंतर्गत 6,80,040 किलोमीटर सड़क का निर्माण किया गया है |

5. स्वच्छ भारत मिशन – ग्रामीण : स्वच्छ भारत मिशन का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को किया था | इस योजना का उद्देश्य भारत को खुला शौच मुक्त करना है | यह योजना सरकार द्वारा देश के प्रत्येक गाँव में खुला शौच मुक्त अभियान के तहत चलाई गयी थी | "इस योजना के तहत महात्मा गाँधी की 2 अक्टूबर 2019 में 150वीं जयंती के दौरान 10 करोड़ शौचालयों का निर्माण करवा कर गाँव को खुला में शौच से मुक्त करवाया |" इस योजना के दौरान गाँव के उन घरों को चिन्हित किया जाता जिनके पास शौचालय नहीं थे फिर उनको शौचालय बनाने में आर्थिक या सामान की सहायता की जाती थी | स्वच्छ भारत मिशन का 2014 से 2019 के पहले चरण में सरकार ने खुले में शौच मुक्त अभियान के तहत स्वच्छता का कार्य किया | स्वच्छ भारत मिशन का दुसरे चरण 2020 से 2025 में सरकार द्वारा ठोस कचरा प्रबंधन का कार्य करना है | इस अभियान को सरकार द्वारा ODF – Plus का नाम दिया है | इसके तहत 2023 मई तक 3 लाख गांवों ने इस दुसरे चरण ODF – Plus को पूरा कर लिया है |

6. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना : हमारे देश में सबसे ज्यादा लोग कृषि क्षेत्र से ही अपनी आजीविका का अर्जन करते हैं | लेकिन देश में अधिकतम ग्रामीण क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ सिंचाई के लिए जल की पूर्ति नहीं हो पाती वे भगवान भरोसे ही चलती है | इस स्थिति को देखते हुए सरकार ने सिंचाई योजना की शुरुआत जुलाई 2015 को की | इस योजना का उद्देश्य कृषि के लिए सिंचाई जल का उचित प्रबंध करना ताकि कृषि उत्पादकता में वृद्धि हो सके | पानी के व्यर्थ उपयोग के लिए जल का सदुपयोग करने की तकनीक को बताना | प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में कुछ घटकों को जोड़ा गया जो इस प्रकार हैं | हर खेत को पानी, जल संभरण विकास, प्रति बूंद अधिक फसल और मनरेगा |

7. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम : योजनओं को शुरू करने के लिए कोई न कोई कारण रहता है | और देखा जाये तो ज्यादातर आर्थिक रूप से सक्षम बनाने और आर्थिक सहायता करना योजनओं का उद्देश्य रहता है | जैसा कि कहा गया है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है | इसलिए सरकार द्वारा 15 अगस्त 1995 को राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम शुरू किया गया | इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई पेंशन योजनाओं को चलाया गया | जैसे वृद्धावस्था पेंशन योजना, विधवा पेंशन और दिव्यांगता पेंशन योजना | इस योजना को वर्तमान की सरकार द्वारा महत्व देते हुए चलाया है |

वृद्धावस्था पेंशन योजना के अंतर्गत आयु 60 वर्ष तय की गयी है | इस योजना का लाभ प्राप्त करने वाला गरीबी रेखा से नीचे होना चाहिए और मासिक आय 4000 तक होनी चाहिए | वृद्धावस्था पेंशन योजना में लाभार्थी को हर माह 1500 रुपये दिए जाते है |

विधवा पेंशन उन महिलाओं के लिए है जिनके पति की मृत्यु हो गयी हो | जो किसी पर आर्थिक रूप से आश्रित न हो | इसमें पात्र महिलाओं को आर्थिक सहायता 300 से 2000 रुपये के मध्य की जाती है |

दिव्यांगता पेंशन योजना का लाभ उन नागरिकों को दिया जाता है जो किन्हीं कारणों से अंगहीन हैं | यह योजना वर्ष 2009 में ग्रामीण विकास मंत्रालय ने दिव्यांग लोगों के लिए चलाई थी | ताकि उन्हें किसी प्रकार की कोई आर्थिक कमी न हो और वे भी मुख्या धारा के साथ गति से चल सकें | इसमें पात्र व्यक्ति की आयु 18 वर्ष से ज्यादा और दिव्यांगता का प्रतिशत 80% होना चाहिए |

8. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना : किसान की सारी कमाई खेती पर ही निर्भर रहती है | किसान जब खेती करता है तो उसे फसल लगाने से ही चिंता शुरू हो जाती है और तब तक रहती है जब तक कटाई न हो जाये | कभी प्रकृति का भय तो कभी जानवरों का डर |इसके लिए भारत सरकार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत 13 जनवरी 2016 को की | इस योजना का उद्देश्य किसान को फसल के नुकसान पर आर्थिक सहायता उपलब्ध करना है | इस योजना से किसानों को यह लाभ हुआ कि फसल के नुकसान का आर्थिक बोझ उन पर नहीं पड़ता है |

9. राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान : पंडित दीनदयाल उपाध्याय शक्तियों के विकेंद्रीकरण की बात करते हुए कहते हैं कि राजनिति का विकेंद्रीकरण पंचायत स्तर तक होना चाहिए | भारत सरकार द्वारा 73 वें संविधान संशोधन में पंचायती राज को जोड़ा गया | राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान का उद्देश्य पंचायत के लोगों को अपने द्वारा अपने

शासन के लिए समर्थ बनाना | सतत विकास के लिए तय लक्ष्यों को धरातल पर सार्थक रूप देना | प्राचीन काल की बात करे तो भारत में पंचायती राज प्रणाली सुचारू रूप से कार्य करती थी | आज उसी को देखते हुए पंचायती प्रणाली को मजबूत बनाने की दिशा में महतवपूर्ण कदम है | ग्राम स्वराज अभियान का उद्देश्य लोगों की सूझ बुझ को सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक मामलों में बढ़ाना है |

10. आयुष्मान भारत योजना : गरीबी के कारण भारत में कई ऐसे नागरिक है जो अपना इलाज करवाने में असक्षम हैं | जो उपचार के अभाव में ही अपने प्राणों को त्याग देते हैं | इसका प्रमुख कारण पैसे का अभाव है | इसी को देखते हुए भारत सरकार ने 2018 में आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की | इस योजना के तहत लाभार्थी का आयुष्मान कार्ड बनाया जाता है | इसमें लाभार्थी को 5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता की जाती है |

11. प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना : भारत में जसंख्या बहुत ज्यादा है | भारत में ऐसे बहुत से लोग हैं जो कृषि के अलावा अन्य कार्यों से अपनी आजीविका चलाते है | ग्रामीण परिवेश की बात करे तो वहां ऐसे लोग अधिक पाए जाते हैं | साधनों के अभाव में वे लोग केवल काममात्र तक ही सीमित हैं | शिल्पकारों और कारीगरों के लिए इस योजना का शुभारंभ प्रधानमंत्री मोदी ने सितम्बर 2023 को किया था | इस योजना के अंतर्गत रखे गए व्यापारों की संख्या 18 है | इस योजना का उद्देश्य जो कारीगर अपना परम्परागत काम करते हैं उनको समर्थ बनाना है | इसके लिए उन कारीगरों को नई तकनीक में कुशल करना है | प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत योग्य कारीगरों को 3 लाख रूपए का ऋण बिना जमानत के उपलब्ध करवाना है | इस योजना के मध्यम से गाँव में रोजगार को बढ़ाने में काफी सहायता होगी | गाँव में छोटे पर कुटीर उद्योगों को बल मिलेगा | भारत में सदियों से हस्तशिल्प कार्य चलता आ रहा है | परन्तु वर्तमान में हम देखते हैं कि पारम्परिक या पुस्तैनी कार्य करने वाले हस्तशिल्पी आर्थिक तंगी के कारण अपने कार्यों को नहीं करते है | इस योजना के माध्यम से ऋण प्रदान करके आर्थिक रूप से मजबूत किया जा सकता है | इसके चलते भारतीय अर्थव्यवस्था में भी इनका योगदान देखा जा सकता है | इस परिणाम यह होगा कि जो लोग काम एक कारण गाँव से पलायन करने को विवश थे उनका पलायन रुक जायेगा और गाँव पुनः समृद्धि की और अग्रसर होंगे |

निष्कर्ष एवं समाधान

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों एवं समाधानों की चर्चा हम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर कर सकते हैं –

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विचारों का अबतक ठीक ढंग से अध्ययन नहीं किया गया है,
2. पंडित दीनदयाल के विचारों पर आधारित ग्रामीण विकास के प्रतिमान बहुत कम बनाये गए हैं,
3. प्रस्तुत अध्ययन यह सिद्ध करता है कि यदि निष्ठा से दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विचारों का सञ्चालन किया जाये तो गाँव के विकास में आने वाली बाधाओं का समाधान हो सकता है,
4. केंद्र एवं राज्य सरकारें पंडित दीनदयाल के ग्रामीण विकास प्रतिमानों का अध्ययन करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र स्थानीय, प्रांतीय एवं केंद्र स्तर पर समितियां बनाकर लक्षित लोगो के लिए योजनाये बनायें व उनका सुचारू क्रियान्वयन करवाए,
5. केंद्र से लेकर स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक एवं क्रियान्वयन प्रबंधन ठोस एवं परिणामोन्मुखी बनाकर लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है, एवं
6. सुचारू एवं अद्यतन निगरानी व्यवस्था स्थापित की जाये ताकि पंडित दीनदयाल ग्रामीण विकास के प्रतिमानों पर आधारित एवं संचालित योजनाओं तथा कार्यक्रमों के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके I

अतः हम यह कह सकते हैं कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे व्यक्ति समाज में विरले ही होते है जो अपनी परवाह किये बिना समाज, देश और राष्ट्र की उन्नति में ही अपना सारा जीवन लगा देते हैं | पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन इतना सरल और आरामदायक नहीं रहा | छोटी सी आयु में ही दीनदयाल के जीवन में ऐसा दुखों का पहाड़ टूट पड़ा जिससे उभरना बहुत मुश्किल होता | दीनदयाल उपाध्याय के जीवन में एक ऐसा मोड़ आया जब वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आये यही से उनका जीवन, उनका न रहकर राष्ट्र और समाज को समर्पित हो गया | दीनदयाल ने गरीबी और साधनहीनता को बहुत पास से देखा था | उन्हें यह भलीभांति ज्ञात था की साधनों के बिना व्यक्ति कैसे निर्वाह करता है | इसी के चलते दीनदयाल ने अंतिम व्यक्ति के उत्थान की बात की और सरकारों को यह सुझाव दिया कि योजना की रूप रेखा दीनहीन समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाये I

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, सं.अमरजीत.(2017).मैं दीनदयाल बोल रहा हूँ.नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान.पृ.53 |
2. मार्कंडेय पुराण– अध्याय 49 श्लोक 47
3. महाभारत शांति पर्व – अध्याय 87, श्लोक 3, पृ.4649 |
4. सिंह, सं.अमरजीत.(2017).मैं दीनदयाल बोल रहा हूँ.नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान I
5. अग्रवाल,डॉ.अरविन्द.(2018). दीनदयाल : प्रेरक प्रसंग. नई दिल्ली : विद्या विहार I

6. रिपोर्ट,भारत सरकार.राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के कार्यान्वयन के लिए फ्रेमवर्क.ग्रामीण विकास मंत्रालय.panchayatiraj.up.nic.in
7. वेदव्यास,महर्षि.महाभारत शांति पर्व अध्याय 87, श्लोक 3, पृ.4649 I
8. अग्रवाल,डॉ अमित.(2015).भारत में ग्रामीण समाज.दिल्ली : विवेक प्रकाशन I
9. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).एकात्म मानववाद.नॉएडा:जागृति प्रकाशन I
10. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा.लखनऊ:लोकहित प्रकाशन |
11. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).एकात्म मानववाद.नॉएडा:जागृति प्रकाशन. पृ.15 |
12. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा.लखनऊ:लोकहित प्रकाशन. पृ. 27 I
13. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ.(2012).विषय बिंदु(चतुर्थ संस्करण).आगरा: शरद प्रकाशन. पृ. 45 |
14. अर्थायाम.(2018). नागपुर: श्रीभारती प्रकाशन. पृ. 50 |
15. रामकृष्ण मठ.(2012).विवेकानंद – राष्ट्र को आह्वान. नागपुर : स्वामी ब्रह्मस्थानंद. पृ.51 |
16. विवेकानंद, स्वामी.(1982).नया भारत गढ़ो.नागपुर: रामकृष्णमठ. पृ. 2 |
17. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा.लखनऊ:लोकहित प्रकाशन I
18. पुरी,मनोहर.(2015).अनिकेत संत दीनदयाल उपाध्याय.नई दिल्ली : राष्ट्रीय बुक न्यास |
19. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).एकात्म मानववाद.नॉएडा:जागृति प्रकाशन. पृ. 70 I
20. सिंह, सं.अमरजीत.(2017).मैं दीनदयाल बोल रहा हूँ.नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान. पृ. 115 I
21. कक्षा-6.अध्याय -5.सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन.NCERT. पृ.47|
22. शर्मा,डॉ महेश चन्द्र.(2016).दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय भाग -1(प्रथम संस्करण).नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन. पृ.72 |
23. पाण्डेय, जय प्रकाश.(जून,2023).कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका.नई दिल्ली : भारत सरकार I
24. उपाध्याय,दीनदयाल.(2008).एकात्म मानववाद.नॉएडा:जागृति प्रकाशन I
25. अग्रवाल,डॉ.अरविन्द.(2018). दीनदयाल : प्रेरक प्रसंग. नई दिल्ली : विद्या विहार |
26. undp.org/india/.2023.
27. india.gov.in
28. www.myscheme.gov.in
29. pmayg.nic.in
30. पाण्डेय, जय प्रकाश.(जून,2023).कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका.नई दिल्ली : भारत सरकार |
31. नवम्बर,2024.कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका |
32. www.ibef.org

HOW TO CITE THIS ARTICLE: अंचल, & कुमार, अ. (2025). पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ग्रामीण विकास के मॉडल को साकार करती सरकारी योजनाएं: एक अध्ययन. सुदर्शन रिसर्च जर्नल, 3(2), 24-32.